भक्ति काव्य: रामचरितमानस और रघुवंश महाकाव्य में (चरित्रांकन कला) लोकजीवन वर्णन

डॉ0 शशि बाला वर्मा*

हिंदी साहित्य में भक्ति काव्य रामचरितमानस और संस्कृत साहित्य में रघुवशं महाकाव्य का महत्व किसी भी सहृदय प्रेमी पाठक से अछूता नहीं है। संस्कृत में हिम शिखरों से सहज–स्रवित राम कथा धारा ने प्राकृत और अपभ्रश की ऊंची–नीची उपत्यकाओं को पार कर भारतवर्श की अन्यान्य भाषाओं को प्रभावित करते हुए हिंदी के समतल प्रांगण में प्रवेश किया। जहाँ अन्य भारतीय भाषाओं में रामकथा का विस्तार बारहवीं शताब्दी के उपरांत परिलक्षित होता है वहीं हिंदी में रामकथा का प्रणयन दसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही मिलता है। आदिकाल में रामकथा रासो ग्रंथों में फुटकर रूप में रची गई, "पृथ्वीराज रासों" में रामकथा का प्रसंग वर्णित है। भारतीय साहित्य परंपरा में रामकाव्य की सर्वाधिक रचना संस्कृत और हिंदी में हुई है। संस्कृत में प्रथमतः वैदिक साहित्य में रामकाव्य के दर्शन होते हैं। वहीं संस्कृत लौकिक साहित्य में रामकथा का विस्तार अपार है। तुलसीदासकृत रामचरितमानस में रामकथा को लेखक ने अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। यह महान रचना संस्कृत साहित्य में रचित रामकथा और अन्य सभी श्रेष्ठ ग्रंथों की ऊर्जा को समेटे हुए है। किंतु इसे किसी ग्रंथ का ऋणी नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह काव्य नितांत मौलिक है। संस्कृत साहित्य में रघुवंश का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। आलोचना शास्त्र की दृष्टि से यह संस्कृत की सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कृतियों में प्रमुख मानी जाती है। भारतीय आलोचक रघुवंश को कालिदास का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ मानते हैं। इसी कारण कालीदास को रघुकार (रघुवंश का रचयिता) अभिधान का प्रयोग किया गया है। इसमें रामकथा का संस्पर्श केवल दशम सर्ग तक ही है, यह ग्रंथ पूर्णतः रामकथा पर आधारित है तथापि तत्कालीन युग चरित्र, जीवन मूल्यों का उत्कर्ष–अपकर्ष विस्तारपूर्वक चित्रण होनेसे इसमें वर्णित रामकथा अन्य रामकथा ग्रंथों से भिन्न और महत्वपूर्ण है।

मानव जीवन के साथ लोकजीवन की अटूट संबद्धता रही है। मनुष्य का जीवन विभिन्न प्रकार के लोकाचारों एवं संस्कारों से आबद्ध होता है। डॉ रवींद्र भ्रमर के मतानुसार "लोक मानव को अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक जिन रीति–रिवाजों संस्कारों और आचारों के बीच से गुजरना पड़ता है। उनका कोई एक लेखा–जोखा प्रस्तुत कर सकना बड़ा कठिन है। इन सब का गहन प्रभाव साहित्य पर भी पड़ता है। रचनाकार अपनी कृति में विशेष रूप से प्रबंध रचना में जीवन के विविध पक्षों को दर्शाते समय उन्हें सजीव और विश्वसनीय बनाने के लिए सहज रूप से लोक ग्राह्य बनाने हेतु। लोक प्रचलित प्रथाओं विश्वासों मान्यताओं आदि तत्वों को भी यथावत चित्रित करता है।

रघुवशं और रामचरितमानस में इन तत्वों की विवेचना इस प्रकार प्रस्तुत है कि संस्कार हिंदू जनजीवन को समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने के लिए 16 संस्कारों की व्यवस्था की गई है।